وَمَا لِيَ لَآ اَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٢٢﴾

22. और मुझे क्या है कि मैं उस ज़ात की इबादत न करूं जिसने मुझे पैदा फ़रमाया है और तुम (सब) उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे।

ءَاَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً اِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ﴿٢٣﴾

23. क्या मैं उस (अल्लाह) को छोड़ कर ऐसे मा'बूद बना लूं कि अगर खुदाए रह़मान मुझे कोई तक्लीफ़ पहुंचाना चाहे तो न मुझे उनकी सिफ़ारिश कुछ नफ़ा' पहुंचा सके और न वोह मुझे छुड़ा ही सकें।

اِنِّيْٓ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾

24. बेशक तब तो मैं खुली गुमराही में हूंगा।

اِنِّيْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ﴿٢٥﴾

25. बेशक मैं तुम्हारे रब पर ईमान ले आया हूं, सो तुम मुझे (ग़ौरसे) सुनो।

قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۭ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ۙ

26. (उसे काफ़िरों ने शहीद कर दिया तो उसे) कहा गया (आ) बहिश्त में दाख़िल हो जा, उसने कहा : ऐ काश ! मेरी क़ौम को मा'लूम हो जाता।

بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

27. कि मेरे रब ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी है और मुझे इ़ज़्ज़तो क़ुर्बतवालों में शामिल फ़रमा दिया है।

وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰي قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ﴿٢٨﴾

28. और हमने उसके बाद उसकी क़ौम पर आस्मान से (फ़रिश्तों का) कोई लश्कर नहीं उतारा और न ही हम (उनकी हलाकत के लिए फरिश्तों को) उतारनेवाले थे।

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ ﴿٢٩﴾

29. (उनका अ़ज़ाब) एक सख़्त चिंघाड़ के सिवा और कुछ न था, बस वोह उसी दम (मर कर कोयले की तरह) बुझ गए।

يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٠﴾

وقف غفران

30. हाए (उन) बंदों पर अफ़्सोस ! उनके पास कोई रसूल न आता था मगर येह कि वोह मज़ाक उड़ाते थे।

اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ

31. क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने इनसे पहले कितनी

ही क़ौमें हलाक कर डालीं, कि अब वोह लोग उनकी तरफ़ पलट कर नहीं आएंगे।

الْقُرُوْنِ اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٣١﴾

32. मगर येह कि वोह सब के सब हमारे हुज़ूर ह़ाज़िर किए जाएंगे।

وَ اِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٢﴾ ع ٢ ٢٠ ١

33. और उनके लिए एक निशानी मुर्दा ज़मीन है, जिसे हमने ज़िन्दा किया और हमने उससे (अनाज के) दाने निकाले, फिर वोह उसमें से खाते हैं।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۚ اَحْيَيْنٰهَا وَ اَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ﴿٣٣﴾

34. और हमने उसमें खजूरों और अँगूरों के बाग़ात बनाए और उसमें हमने कुछ चश्मे भी जारी कर दिए।

وَ جَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّ اَعْنَابٍ وَّ فَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ﴿٣٤﴾ لا

35. ताकि वोह उसके फल खाएं और उसे उनके हाथों ने नहीं बनाया, फिर (भी) क्या वोह शुक्र नहीं करते।

لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَ مَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

36. पाक है वोह ज़ात जिसने सब चीज़ों के जोड़े पैदा किए, उनसे (भी) जिन्हें ज़मीन उगाती है और ख़ुद उनकी जानों से भी और (मज़ीद) उन चीज़ों से भी जिन्हें वोह नहीं जानते।

سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَ مِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾

37. और एक निशानी उनके लिए रात (भी) है, हम उसमें से (कैसे) दिन को खींच लेते हैं सो वोह उस वक़्त अँधेरे में पड़े रेह जाते हैं।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۚ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ﴿٣٧﴾ لا

38. और सूरज हमेशा अपनी मुक़र्ररा मन्ज़िल के लिए (बिगैर रुके) चलता रेहता है, येह बड़े ग़ालिब बहुत इ़ल्मवाले (रब) की तक़्दीर है।

وَ الشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٣٨﴾

39. और हमने चांदकी (ह़रकतो गर्दिश की) भी मन्ज़िलें मुक़र्रर कर रखी हैं यहां तक कि (उसका अह्ले ज़मीनको

وَ الْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ

كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾

दिखाई देना) घटते घटते खजूरकी पुरानी टेहनी की तरह हो जाता है।

لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَ كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾

40. न सूरज की येह मजाल कि वोह (अपना मदार छोड़ कर) चांद को जा पकड़े और न रात ही दिनसे पहले नमूदार हो सक्ती है, और सब (सितारे और सय्यारे) अपने (अपने) मदार में ह़रकत पज़ीर हैं।

وَ اٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾ۙ

41. और एक निशानी उनके लिए येह (भी) है कि हमने उनके आबाओ अजदाद को (जो ज़ुर्रिय्यते आदम थे) भरी कश्ती (ए-नूह़) में सवार कर (के बचा) लिया था।

وَ خَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. और हमने उनके लिए उस (कश्ती) के मानिन्द उन (बहुत सी और सवारियों) को बनाया जिन पर येह लोग सवार होते हैं।

وَ اِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾ۙ

43.और अगर हम चाहें तो उन्हें ग़र्क़ कर दें तो न उनके लिए कोई फ़रियाद रस होगा और न वोह बचाए जा सकेंगे।

اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾

44. सिवाए हमारी रह़मत के और (येह) एक मुक़र्ररा मुद्दत तकका फ़ाइदा है।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾

45. और जब उनसे कहा जाता है कि तुम उस (अ़ज़ाब) से डरो जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे है। ताकि तुम पर रह़म किया जाए।

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. और उनके रब की निशानियों में से कोई (भी) निशानी उनके पास नहीं आती मगर वोह उससे रू गर्दानी करते हैं।

وَ اِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ

47. और जब उनसे कहा जाता है कि तुम उसमें से (राहे ख़ुदा में) ख़र्च करो जो तुम्हें अल्लाहने अ़ता किया है तो काफ़िर लोग ईमानवालोंसे केहते हैं क्या हम उस (ग़रीब) शख़्स को खिलाएं जिसे अगर अल्लाह चाहता तो (ख़ुद ही)

اَطْعَمَهٗۤ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ﴿۴۷﴾

खिला देता। तुम तो खुली गुमराही में ही (मुब्तिला) हो गए हो।

وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۴۸﴾

48. और वोह केहते हैं कि येह वा'दए (क़ियामत) कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो।

مَا یَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَیْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ یَخِصِّمُوْنَ ﴿۴۹﴾

49. वोह लोग सिर्फ़ एक सख़्त चिंघाड़ के ही मुन्तज़िर हैं जो उन्हें (अचानक) पकड़ेगी और वोह आपस में झगड़ रहे होंगे।

فَلَا یَسْتَطِیْعُوْنَ تَوْصِیَةً وَّ لَاۤ اِلٰۤى اَهْلِهِمْ یَرْجِعُوْنَ ﴿۵۰﴾ ع ۳ ۱۸ ۲

50. फिर न तो वोह वसिय्यत करने के ही क़ाबिल रहेंगे और न अपने घरवालों की तरफ़ वापस पलट सकेंगे।

وَ نُفِخَ فِی الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ یَنْسِلُوْنَ ﴿۵۱﴾

51. और (जिस वक़्त दोबारा) सूर फूंका जाएगा तो वोह फ़ौरन क़ब्रों से निकल कर अपने रबकी तरफ़ दौड़ पड़ेंगे।

قَالُوْا یٰوَیْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَ صَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿۵۲﴾

52. (रोज़े मेह्शर की हौलनाकियां देख कर) कहेंगे : हाए हमारी कम बख़्ती ! हमें किसने हमारी ख़्वाबगाहों से उठा दिया ? (येह ज़िन्दा होना) वोही तो है जिस का ख़ुदाए रह्मानने वा'दा किया था और रसूलों ने सच फ़रमाया था।

وقف لازم وقف غفران وقف منزل

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَیْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِیْعٌ لَّدَیْنَا مُحْضَرُوْنَ ﴿۵۳﴾

53. येह महज़ एक बहुत सख़्त चिंघाड़ होगी तो वोह सबके सब यकायक हमारे हुज़ूर ला कर हाज़िर कर दिए जाएंगे।

فَالْیَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَیْـًٔا وَّ لَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۵۴﴾

54. फिर आजके दिन किसी जान पर कुछ ज़ुल्म न किया जाएगा और न तुम्हें कोई बदला दिया जाएगा सिवाए उन कामों के जो तुम किया करते थे।

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْیَوْمَ فِیْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ﴿۵۵﴾ ج

55. बेशक अह्ले जन्नत आज (अपने) दिल पसंद मशाग़िल (मसलन ज़ियारतों, ज़ियाफ़तों, सिमाअ़ और दीगर ने'मतों) में लुत्फ़ अंदोज़ हो रहे होंगे।

هُمْ وَ اَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى
الْاَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ﴿٥٦﴾

56. वोह और उनकी बीवियां घने सायों में तख़्तों पर तक्ये लगाए बैठे होंगे।

لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا
يَدَّعُوْنَ ﴿٥٧﴾

57. उनके लिए उसमें (हर क़िस्म का) मेवा होगा और उनके लिए हर वोह चीज़ (मुयस्सर) होगी जो वोह तलब करेंगे।

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ ﴿٥٨﴾

58. (तुम पर) सलाम हो (येह) रब्बे रहीम की तरफ़से फ़रमाया जाएगा।

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٥٩﴾

59. और ऐ मुजरिमो! तुम आज (नेकूकारों से) अलग हो जाओ।

اَلَمْ اَعْهَدْ اِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اَنْ
لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ
عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٠﴾

60. ऐ बनी आदम ! क्या मैंने तुमसे इस बातका अ़हद नहीं लिया था कि तुम शैतानकी परस्तिश न करना बेशक वोह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

وَّ اَنِ اعْبُدُوْنِيْ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ
مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾

61. और येह कि मेरी इ़बादत करते रेहना येही सीधा रास्ता है।

وَ لَقَدْ اَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ؕ
اَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٢﴾

62. और बेशक उसने तुम में से बहुत सी ख़िलकत को गुमराह कर डाला फिर क्या तुम अ़क़्ल नहीं रखते थे।

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٦٣﴾

63. येह वोही दोज़ख़ जिसका तुमसे वा'दा किया जाता रहा है।

اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٦٤﴾

64. आज उस दोज़ख़में दाख़िल हो जाओ इस वजह से कि तुम कुफ़्र करते रहे थे।

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى اَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ
اَيْدِيْهِمْ وَ تَشْهَدُ اَرْجُلُهُمْ بِمَا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٦٥﴾

65. आज हम उनके मुंहों पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हमसे बातें करेंगे और उनके पांव उन आ'माल की गवाही देंगे जो वोह कमाया करते थे।

وَ لَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى اَعْيُنِهِمْ
فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَاَنّٰى يُبْصِرُوْنَ ﴿٦٦﴾

66. और अगर हम चाहते तो उनकी आँखों के निशान तक मिटा देते फिर वोह रास्ते पर दौड़ते तो कहां देख सक्ते।

وقف غفران

وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا
اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٦٧﴾ ع

67. और अगर हम चाहते तो उनकी रहाइशगाहों पर ही हम उनकी सूरतें बिगाड़ देते फिर न वोह आगे जानेकी क़ुदरत रखते और न ही वापस लौट सक्ते।

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِى الْخَلْقِ ؕ
اَفَلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٨﴾

68. और हम जिसे तवील उ़म्र देते हैं उसे क़ुव्वतो तबीअ़त में वापस (बचपन या कमज़ोरी की तरफ़) पलटा देते हैं फिर क्या वोह अ़क़्ल नहीं रखते।

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِىْ لَهٗ ؕ
اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ ۙ ﴿٦٩﴾

69. और हमने उनको (या'नी नबिय्ये मुकर्रम ﷺ को) शे'र केहना नहीं सिखाया और न ही येह उनके शायाने शान है। येह (किताब) तो फ़क़त नसीहत और रौशन क़ुरआन है।

لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٠﴾

70. ताकि वोह उस शख़्स को डर सुनाएं जो ज़िन्दा हो और काफ़िरों पर फ़रमाने हुज्जत साबित हो जाए।

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ
اَيْدِيْنَاۤ اَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ ﴿٧١﴾

71. क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने अपने दस्ते क़ुदरत से बनाई हुई (मख़्लूक़) में से उनके लिए चौपाए पैदा किए तो वोह उनके मालिक हैं।

وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَ
مِنْهَا يَاْكُلُوْنَ ﴿٧٢﴾

72. और हमने उन (चोपायों) को उनके ताबे' कर दिया सो उनमें से कुछ तो उनकी सवारियां हैं और उनमें से बा'ज़ को वोह खाते हैं।

وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ
اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٧٣﴾

73. और उनमें उनके लिए और भी फ़वाइद हैं और मशरूब हैं तो फिर वोह शुक्र अदा क्यों नहीं करते।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً
لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ؕ ﴿٧٤﴾

74. और उन्होंने अल्लाह के सिवा बुतों को मा'बूद बना लिया है इस उम्मीद पर कि उनकी मदद की जाएगी।

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ ۙ وَهُمْ لَهُمْ
جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ ﴿٧٥﴾

75. वोह बुत उनकी मददकी क़ुदरत नहीं रखते और येह (कुफ़्फ़ारो मुशरिकीन) उन (बुतों) के लश्कर होंगे जो (इकट्ठे दोज़ख़में) हाज़िर कर दिए जाएंगे।

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّا نَعْلَمُ مَا
يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ﴿٧٦﴾

وقف لازم

76. पस उनकी बातें आपको रंजीदा ख़ातिर न करें, बेशक हम जानते हैं जो कुछ वोह छुपाते हैं और जो कुछ वोह ज़ाहिर करते हैं।

اَوَلَمْ يَرَ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ
نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٧﴾

77. क्या इन्सानने येह नहीं देखा कि हमने उसे एक नुत्फ़े से पैदा किया, फिर भी वोह खुले तौर पर सख़्त झगड़ालू बन गया।

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّ نَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ
قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ ﴿٧٨﴾

78. और (खुद) हमारे लिए मिसालें बयान करने लगा और अपनी पैदाइश (की हक़ीक़त) को भूल गया। केहने लगा हड्डियों को कौन ज़िन्दा करेगा जबकि वोह बोसीदह हो चुकी होंगी।

قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ اَنْشَاَهَآ اَوَّلَ
مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمُۨ ﴿٧٩﴾

79. फ़रमा दीजिए : उन्हें वोही ज़िन्दा फ़रमाएगा जिसने उन्हें पेहली बार पैदा किया था और वोह हर मख़्लूक को खूब जाननेवाला है।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ
الْاَخْضَرِ نَارًا فَاِذَآ اَنْتُمْ مِّنْهُ
تُوْقِدُوْنَ ﴿٨٠﴾

80. जिसने तुम्हारे लिए सर सब्ज़ दरख़्तसे आग पैदा की फिर अब तुम उसीसे आग सुलगाते हो।

اَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يَّخْلُقَ
مِثْلَهُمْ ؕ بَلٰى ۗ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ﴿٨١﴾

وقف غفران

81. और क्या वोह जिसने आस्मानों और ज़मीन को पैदा फ़रमाया है इस बात पर कादिर नहीं कि उन जैसी तख़्लीक़ (दोबारा) कर दे, क्यों नहीं, और वोह बड़ा पैदा करनेवाला खूब जाननेवाला है।

اِنَّمَآ اَمْرُهٗٓ اِذَآ اَرَادَ شَيْـًٔا اَنْ
يَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٨٢﴾

82. उसका अम्रे (तख़्लीक) फ़कत येह है कि जब वोह किसी शयको (पैदा फ़रमाना) चाहता है तो उसे फ़रमाता है हो जा, पस वोह फ़ौरन (मौजूद या ज़ाहिर) हो जाती है। (और होती चली जाती है)।

فَسُبْحٰنَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ
كُلِّ شَيْءٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾ ع

٥ ع ٦ ٤

83. पस वोह ज़ात पाक है जिसके दस्ते (कुदरत) में हर चीज़की बादशाहत है और तुम उसीकी तरफ़ लौटाए जाओगे।

आयातुहा 182 | 37 सूरतुस सॉफ़्फ़ाति मक्किय्यतुन 56 | रुकूआ़तुहा 5

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۙ﴿۱﴾

1. क़सम है क़तार दर क़तार सफ़ बस्ता जमाअ़तों की।

فَالزّٰجِرٰتِ زَجۡرًا ۙ﴿۲﴾

2. फिर बादलों को खींच कर ले जानेवाली या बुराइयों पर सख़्ती से झिड़कने वाली जमाअ़तों की।

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكۡرًا ۙ﴿۳﴾

3. फिर ज़िक्रे इलाही (या क़ुरआन मजीद) की तिलावत करनेवाली जमाअ़तों की।

اِنَّ اِلٰهَكُمۡ لَوَاحِدٌ ؕ﴿۴﴾

4. बेशक तुम्हारा मा'बूद एक ही है।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا وَرَبُّ الۡمَشَارِقِ ؕ﴿۵﴾

5. (जो) आस्मानों और ज़मीन का और जो (मख़्लूक़) इन दोनोंके दरमियान है उसका रब है, और तुलूए़ आफ़्ताब के तमाम मुक़ामात का रब है।

اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنۡيَا بِزِيۡنَةِ ۨ الۡكَوَاكِبِ ۙ﴿۶﴾

6. बेशक हमने आस्माने दुनिया (या'नी पहले कुर्ए समावी) को सितारों और सय्यारों की ज़ीनत से आरास्ता कर दिया।

وَحِفۡظًا مِّنۡ كُلِّ شَيۡطٰنٍ مَّارِدٍ ۚ﴿۷﴾

7. और (उन्हें) हर सरकश शैतानसे मह़फ़ूज़ बनाया।

لَا يَسَّمَّعُوۡنَ اِلَى الۡمَلَاِ الۡاَعۡلٰى وَيُقۡذَفُوۡنَ مِنۡ كُلِّ جَانِبٍ ۖ﴿۸﴾

8.वोह(शयातीन) आ़लमे बाला की तरफ़ कान नहीं लगा सक्ते। और उन पर हर तरफ़से (अंगारे) फेंके जाते हैं।

دُحُوۡرًا وَّلَهُمۡ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۙ﴿۹﴾

9.उनको भगाने के लिए और उनके लिए दाइमी अ़ज़ाब है।

اِلَّا مَنۡ خَطِفَ الۡخَطۡفَةَ فَاَتۡبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ؕ﴿۱۰﴾

10. मगर जो (शैतान) एक बार झपट कर (फ़रिश्तों की कोई बात) उचक ले तो चमकता हुआ अंगारा उसके पीछे लग जाता है।

فَاسۡتَفۡتِهِمۡ اَهُمۡ اَشَدُّ خَلۡقًا اَمۡ مَّنۡ خَلَقۡنَا ؕ اِنَّا خَلَقۡنٰهُمۡ مِّنۡ طِيۡنٍ

11.इनसे पूछिए कि क्या येह लोग तख़्लीक किए जाने में ज़ियादह सख़्त (और मुश्किल) हैं या वोह चीज़ें जिन्हें हमने (आस्मानी काइनात में) तख़्लीक फ़रमाया है,

لَّازِبٍ ﴿١١﴾

बेशक हमने इन लोगों को चिपकनेवाले गारे से पैदा किया है।

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ﴿١٢﴾ ۖ

12. बल्कि आप तअ़ज्जुब फ़रमाते हैं और वोह मज़ाक़ उड़ाते हैं।

وَإِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ﴿١٣﴾ ۖ

13. और जब उन्हें नसीह़त की जाती है तो नसीह़त क़ुबूल नहीं करते।

وَإِذَا رَأَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ﴿١٤﴾ ۖ

14. और जब कोई निशानी देखते हैं तो तमस्ख़ुर करते हैं।

وَقَالُوْٓا إِنْ هٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ ۚ

15. और केहते है कि येह तो सिर्फ़ खुला जादू है।

ءَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَإِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿١٦﴾ ۙ

16. क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो हम यक़ीनी तौर पर (दोबारा ज़िन्दा कर के) उठाए जाएंगे ?

أَوَ اٰبَآؤُنَا الْأَوَّلُوْنَ ﴿١٧﴾ ؕ

17.और क्या हमारे अगले बापदादा भी (उठाए जाएंगे)?

قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ﴿١٨﴾ ۚ

18. फ़रमा दीजिए : हां और (बल्कि) तुम ज़लीलो रुस्वा (भी) होगे।

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿١٩﴾

19. पस वोह तो मह़ज़ एक (ज़ोरदार आवाज़की) सख़्त झिड़क होगी सो सब अचानक (उठ कर) देखने लग जाएंगे।

وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿٢٠﴾

20. और कहेंगे : हाए हमारी शामत, येह तो जज़ा का दिन है।

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢١﴾ ع ١ ٢١ ٥

21. (कहा जाएगा : हां !) येह वोही फ़ैसले का दिन है जिसे तुम झुटलाया करते थे।

اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾ ۙ

22. उन (सब) लोगोंको जमा' करो जिन्होंने ज़ुल्म किया और उनके साथियों और पैरव कारों को (भी) और उन (मा'बूदाने बातिला) को (भी) जिन्हें वोह पूजा करते थे।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ إِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾ الربع

23. अल्लाह को छोड़ कर, फ़िर उन सबको दोज़ख़की राह पर ले चलो।

وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. और उन्हें (सिरात के पास) रोको, उनसे पूछ गछ होगी।

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. (उनसे कहा जाएगा :) तुम्हें किया हुवा तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते।

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾

26. (वोह मदद क्या करेंगे) बल्कि आज तो वोह खुद गरदनें झुकाए खड़े होंगे।

وَ اَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. और वोह एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जे हो कर बाहम सवाल करेंगे।

قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿٢٨﴾

28. वोह कहेंगे : बेशक तुम ही तो हमारे पास दाएं तरफ़से (या'नी अपने हक़पर होनेकी क़स्में खाते हुए) आया करते थे।

قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٩﴾ ۚ

29. (उन्हें गुमराह करनेवाले पेश्वा) कहेंगे : बल्कि तुम खुद ही ईमान लानेवाले न थे।

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾

30. और हमारा तुम पर कुछ ज़ोर (ओर दबाव) न था बल्कि तुम खुद सरकश लोग थे।

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ﴿٣١﴾

31. पस हम पर हमारे रबका फ़रमान साबित हो गया। (अब) हम ज़ाइक़ए (अ़ज़ाब) चखनेवाले हैं।

فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾

32. सो हमने तुम्हें गुमराह कर दिया बेशक हम खुद गुमराह थे।

فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾

33. पस उस दिन अ़ज़ाबमें वोह (सब) बाहम शरीक होंगे।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾

34. बेशक हम मुजरिमोंके साथ ऐसा ही किया करते हैं।

اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۙ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. यक़ीनन वोह ऐसे लोग थे कि जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के सिवा कोई लाइक़े इबादत नहीं तो वोह तकब्बुर करते थे।

وَ يَقُوْلُوْنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿٣٦﴾

36. और केहते थे किया हम एक दीवाने शाइर की ख़ातिर अपने मा'बूदों को छोड़नेवाले हैं?।

بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَ صَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾

37. (वोह न मजूनन है न शाइर) बल्कि वोह (दीने) हक़ ले कर आए हैं और उन्होंने (अल्लाहके) पयग़म्बरोंकी तस्दीक़ की है।

اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿٣٨﴾

38. बेशक तुम दर्दनाक अ़ज़ाब का मज़ा चखनेवाले हो।

وَ مَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٩﴾

39. और तुम्हें (कोई) बदला नहीं दिया जाएगा मगर सिर्फ़ उसीका जो तुम किया करते थे।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾

40. (हां) मगर अल्लाह के वोह (बर्गुज़ीदा-व-मुन्तख़ब) बन्दे जिन्हें (नफ़्स और नफ़्सानिय्यत से) रिहाई मिल चुकी है।

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤١﴾

41. येही वोह लोग हैं जिन के लिए (सुब्हो शाम) रिज़्क़े ख़ास मुक़र्रर है।

فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٤٢﴾

42. (हर क़िस्म के) मेवे होंगे और उनकी ता'ज़ीमो तकरीम होगी।

فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٤٣﴾

43. ने'मतों और राहतोंके बाग़ात में (मुक़ीम होंगे)।

عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾

44. तख़्तों पर मस्नद लगाए आमने सामने (जलवा अफ़रोज़ होंगे)।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿٤٥﴾

45. उन पर छलकती हुई शराबे (तहूर) के जाम का दौर चल रहा होगा।

بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾

46. जो निहायत सफ़ेद होगी, पीनेवालों केलिए सरासर लिज़्ज़त होगी।

لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّ لَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾

47. ना उसमें कोई ज़रर या सर का चकराना होगा और न वोह उस (के पीने) से बहेक सकेंगे।

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾

48. और उनके पहलू में निगाहें नीची रखनेवाली, बड़ी ख़ूबसूरत आँखोंवाली (हूरें बैठी) होंगी।

كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾

49. (वोह सफ़ेदो दिलकश रंगतमें ऐसे लगेंगी) गोया गर्दो ग़ुबार से महफ़ूज़ अंडे (रखे) हों।

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾

50. फिर वोह (जन्नती) आपस में मुतवज्जे हो कर एक दूसरे से (ह़ालो अहवाल) दरयाफ़्त करेंगे।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ﴿٥١﴾

51. उनमें से एक केहनेवाला (दूसरे से) कहेगा कि मेरा एक मिलनेवाला था (जो आख़िरत का मुन्किर था)।

يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٢﴾

52. वोह (मुझे) केहता था क्या तुम भी (इन बातोंका) यक़ीन और तस्दीक़ करनेवालों में से हो।

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٣﴾

53. क्या जब हम मर जाएंगे और हम मिट्टी और हड्डियां हो जाएंगे तो क्या हमें (उस ह़ालमें) बदला दिया जाएगा।

قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿٥٤﴾

54. फिर वोह (जन्नती) कहेगा : क्या तुम (उसे) झांक कर देखोगे (कि वोह किस ह़ालमें है)।

فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٥٥﴾

55. फिर वोह झांकेगा तो उसे दोज़ख़ के(बिल्कुल) वस्त में पाएगा।

قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٦﴾

56. (उससे) कहेगा : ख़ुदाकी क़सम तू इसके क़रीब था के मुझे भी हलाक कर डाले।

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٥٧﴾

57. और अगर मेरे रबका एह़सान न होता तो मैं (भी तुम्हारे साथ अ़ज़ाब में) ह़ाज़िर किए जानेवालों में शामिल हो जाता।

اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٨﴾

58. सो (जन्नती ख़ुशीसे पूछेंगे :) क्या अब हम मरेंगे तो नहीं।

اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾

59. अपनी पहली मौत के सिवा (जिससे गुज़र कर हम यहां आ चुके) और न हम पर कभी अ़ज़ाब किया जाएगा?

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾

60. बेशक येही तो अ़ज़ीम कामयाबी है।

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾

61. ऐसी (कामयाबी) के लिए अ़मल करनेवालों को अ़मल करना चाहिए।

اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿٦٢﴾

62. भला येह (ख़ुल्द की) मेहमानी बेहतर है या ज़क़्क़ूम का दरख़्त।

اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٣﴾

63. बेशक हमने उस (दरख़्त) को ज़ालिमों के लिए अ़ज़ाब बनाया है।

اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٤﴾

64. बेशक येह एक दरख़्त है जो दोज़ख़ के सब से निचले हिस्से से निकलता है।

طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٥﴾

65. उसके ख़ूशे ऐसे हैं गोया (बद नुमा) शैतानों के सर हों।

فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٦٦﴾

66. पस वोह (दोज़ख़ी) उसीमें से खानेवाले हैं और उसीसे पेट भरनेवाले हैं।

ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٦٧﴾

67. फिर यक़ीनन उन के लिए उस (खाने) पर (पीप का) मिला हुआ निहायत गरम पानी होगा (जो अंतड़ियों को काट देगा)।

ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى الْجَحِيْمِ ﴿٦٨﴾

68. (खाने के बाद) फिर यक़ीनन उनका दोज़ख़ ही तरफ़ (दोबारा) पलटना होगा।

اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ﴿٦٩﴾

69. बेशक उन्होंने अपने बापदादा को गुमराह पाया।

فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. सो वोह उन्ही के नक़्शे क़दम पर दौड़ाए जा रहे हैं।

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٧١﴾

71. और दर हक़ीक़त उनसे क़ब्ल पहले लोगों में (भी) अक्सर गुमराह हो गए थे।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٧٢﴾

72. और यक़ीनन हमने उनमें भी डर सुनानेवाले भेजे।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾

73. सो आप देखिए कि उन लोगोंका अंजाम कैसा हुआ जो डराए गए थे।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٧٤﴾ ع ٢ ٥٣ ٦

74. सिवाए अल्लाहके चुनीदह-व-बर गुज़ीदह बन्दों के।

وَ لَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ
الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾

75. और बेशक हमें नूह (عليه السلام) ने पुकारा तो हम कितने अच्छे फ़रियाद रस हैं।

وَ نَجَّيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ
الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾

76. और हमने उन्हें और उनके घरवालों को सख़्त तक्लीफ़ से बचा लिया।

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ ﴿٧٧﴾

77. और हमने फ़क़त उनही की नस्लको बाक़ी रेहनेवाला बनाया।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾

78. और पीछे आने वालों (या'नी अंबियाओ उ-मम) में हमने उनका जिक्रे ख़ैर बाक़ी रखा।

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾

79. सलाम हो नूह पर सब जहानों में।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾

80. बेशक हम नेकूकारों को इस तरह बदला दिया करते हैं।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾

81. बेशक वोह हमारे (कामिल) ईमानवाले बंदों में से थे।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾

82. फिर हमने दूसरोंको ग़र्क़ कर दिया।

وَ اِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾

83. बेशक उनके गिरोह में से इब्राहीम (عليه السلام) (भी) थे।

وقف لازم

اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾

84. जब वोह अपने रबकी बारगाह में क़ल्बे सलीम के साथ हाज़िर हूए।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَ قَوْمِهٖ مَاذَا
تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾

85. जब कि उन्होंने अपने बाप (जो हक़ीक़त में चचा था आप ब-वजहे परवरिश उसे बाप केहते थे) और अपनी क़ौमसे कहा : तुम किन चीज़ों की परस्तिश करते हो।

اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾

86. क्या तुम बोहतान बांध कर अल्लाह के सिवा (झूटे) मा'बूदों का इरादाह करते हो।

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾

87. भला तमाम जहानों के रब के बारेमें तुम्हारा क्या ख़याल है।

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾

88. फिर (इब्राहीम عليه السلام ने उन्हें वहम में डालने के लिए) एक नज़र सितारों की तरफ़ की।

فَقَالَ اِنِّیۡ سَقِیۡمٌ ﴿۸۹﴾

89. और कहा मेरी तबीअ़त मुज़महिल है (तुम्हारे साथ मेले पर नहीं जा सक्ता)।

فَتَوَلَّوۡا عَنۡهُ مُدۡبِرِیۡنَ ﴿۹۰﴾

90. सो वोह उनसे पीठ फ़ेर कर लौट गए।

فَرَاغَ اِلٰۤی اٰلِهَتِهِمۡ فَقَالَ اَلَا تَاۡكُلُوۡنَ ﴿۹۱﴾

91. फिर (इब्राहीम ﷺ) उनके मा'बूदों (या'नी बुतों) के पास ख़ामोशी से गए और उन से कहा : क्या तुम खाते नहीं हो।

مَا لَكُمۡ لَا تَنۡطِقُوۡنَ ﴿۹۲﴾

92. तुम्हें क्या है के तुम बोलते नहीं हो।

فَرَاغَ عَلَیۡهِمۡ ضَرۡبًۢا بِالۡیَمِیۡنِ ﴿۹۳﴾

93. फिर (इब्राहीम ﷺ) पूरी कुव्वत के साथ उन्हें मारने (और तोड़ने) लगे।

فَاَقۡبَلُوۡۤا اِلَیۡهِ یَزِفُّوۡنَ ﴿۹۴﴾

94. फिर लोग (मेले से वापसी पर) दौड़ते हुए उनकी तरफ़ आए।

قَالَ اَتَعۡبُدُوۡنَ مَا تَنۡحِتُوۡنَ ﴿۹۵﴾

95. इब्राहीम (ﷺ) ने (उनसे) कहा : क्या तुम इन (ही बेजान पथ्थरों) को पूजते हो जिन्हें ख़ुद तराश्ते हो।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمۡ وَمَا تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۹۶﴾

96. ह़ालांकि अल्लाहने तुम्हें और तुम्हारे (सारे) कामों को ख़ल्क़ फ़रमाया है।

قَالُوا ابۡنُوۡا لَهٗ بُنۡیَانًا فَاَلۡقُوۡهُ فِی الۡجَحِیۡمِ ﴿۹۷﴾

97. वोह केहने लगे : उनके (जलाने के) लिए एक इमारत बनाओ फिर उनको (उसके अंदर) सख़्त भड़कती आग में डाल दो।

فَاَرَادُوۡا بِهٖ كَیۡدًا فَجَعَلۡنٰهُمُ الۡاَسۡفَلِیۡنَ ﴿۹۸﴾

98. ग़रज़ उन्होंने इब्राहीम (ﷺ) के साथ एक चाल चलना चाही सो हमने उन्हींको नीचा दिखा दिया (नतीजतन आग गुलज़ार बन गई)।

وَقَالَ اِنِّیۡ ذَاهِبٌ اِلٰی رَبِّیۡ سَیَهۡدِیۡنِ ﴿۹۹﴾

99. फिर इब्राहीम (ﷺ) ने कहा : मैं (हिजरत कर के) अपने रबकी तरफ़ जानेवाला हूं वोह मुझे ज़रूर रास्ता दिखाएगा (वोह मुल्के शाम की तरफ़ हिजरत फ़रमा गए)

رَبِّ هَبۡ لِیۡ مِنَ الصّٰلِحِیۡنَ ﴿۱۰۰﴾

100. (फिर अर्ज़े मुक़द्दस में पहुंच कर दुआ की) ऐ मेरे रब! सालेह़ीन में से मुझे एक (फ़रज़न्द) अ़ता फ़रमा।

فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾

101. पस हमने उन्हें बड़े बुर्दबार बेटे (ईस्माइल عليه السلام) की बिशारत दी।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ اِنِّيْٓ اَرٰى فِي الْمَنَامِ اَنِّيْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ؕ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۫ سَتَجِدُنِيْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102. फिर जब वोह (ईस्माइल عليه السلام) उनके साथ दौड़ कर चल सकने (की उ़म्र) को पहुंच गया तो (इब्राहीम عليه السلام ने) फ़रमाया : ऐ मेरे बेटे ! मैं ख़्वाबमें देखता हूं कि मैं तुझे ज़ब्ह़ कर रहा हूं सो ग़ौर करो के तुम्हारी क्या राए है। (इस्माईल عليه السلام ने) कहा अब्बाजान ! वोह काम (फ़ौरन) कर डालिए जिसका आपको हुक्म दिया जा रहा है। अगर अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वालों में से पाएंगे।

فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾ ۚ

103. फिर जब दोनों (रज़ाए इलाही के सामने) झुक गए (या'नी दोनोंने मौला के हुक्मको तस्लीम कर लिया) और इब्राहीम(عليه السلام) ने उसे पेशानी के बल लिटा दिया (अगला मन्ज़र बयान नहीं फ़रमाया)।

وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٤﴾ ۙ

104. और हमने उसे निदा दी के ए इब्राहीम !।

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾

105. वाक़ई तुमने अपना ख़्वाब (क्या ख़ूब) सच्चा कर दिखाया। बेशक हम मोह़सिनों को ऐसा ही सिला दिया करते हैं (सो तुम्हें मुकामे ख़ुल्लत से नवाज़ दिया गया है)।

اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾

106. बेशक येह बहुत बड़ी खुली आज़माइश थी।

وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾

107. और हमने एक बहुत बड़ी क़ुरबानीके साथ उसका फ़िदया कर दिया।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ ۖ

108. और हमने पीछे आनेवालों में इसका ज़िक्रे ख़ैर बर क़रार रखा।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾

109. सलाम हो इब्राहीम पर।

كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾

110. हम इसी तरह़ मोह़सिनों को सिला दिया करते हैं।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾

111. बेशक वोह हमारे (कामिल) ईमानवाले बंदों में से थे।

وَ بَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ
الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾

112. और हमने (इस्माईल عليه السلام के बाद) उन्हें इस्हाक (عليه السلام) की बिशारत दी (वोह भी) सालेहीन में से नबी थे।

وَ بٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ وَ مِنْ
ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ
مُبِيْنٌ ﴿١١٣﴾ ع

113. और हमने उन पर और इस्हाक (عليه السلام) पर बरकतें नाज़िल फ़रमाई और उन दोनों की नस्ल में नेकूकार भी हैं और अपनी जान पर खुले ज़ुल्म शिआ़र भी।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾ ج

114. और बेशक हमने मूसा और हारून (عليهما السلام) पर भी एह़सान किए।

وَ نَجَّيْنٰهُمَا وَ قَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ
الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾ ج

115. और हमने ख़ुद उन दोनों को और दोनों की क़ौमको सख़्त तक्लीफ़ से नजात बख़्शी।

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾ ج

116. और हमने उनकी मदद फ़रमाई तो वोही ग़ालिब हो गए।

وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾ ج

117. और हमने उन दोनों को वाज़ेह़ और बय्यन किताब (तौरात) अ़ता फ़रमाई।

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾ ج

118. और हमने उन दोनों को सीधी राह पर चलाया।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ لا

119. और हमने उन दोनों को ह़क़ में (भी) पीछे आने वालों में ज़िक्रे ख़ैर बाकी रखा।

سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾

120. सलाम हो मूसा और हारून पर।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

121. बेशक हम नेकूकारों को उसी तरह सिला दिया करते हैं।

اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾

122. बेशक वोह दोनों हमारे (कामिल) ईमानवाले बन्दों में से थे।

وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾ ط

123. और यक़ीनन इल्यास (عليه السلام भी) रसूलों में से थे।

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾

124. जब उन्होंने अपनी क़ौमसे कहा : क्या तुम (अल्लाह से) नहीं डरते हो।

اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾

125. क्या तुम बअ़ल (नामी बुत) को पूजते हो और सबसे बेहतर ख़ालिक़ को छोड देते हो।

اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَ رَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾

126. (यानी) अल्लाह जो तुम्हारा (भी) रब है और तुम्हारे अगले बापदादों का (भी) रब है।

فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾

127. तो उन लोगोंने (या'नी क़ौमे बअ़लबक ने) इल्यास (عليه السلام) को झुटलाया पस वोह (भी अ़ज़ाबे जहन्नम में) ह़ाज़िर कर दिऐ जाएंगे।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾

128. सिवाए अल्लाहके चुने हुए बन्दों के।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾

129. और हमने उनका ज़िक्रे ख़ैर (भी) पीछे आनेवालों में बरक़रार रखा।

سَلٰمٌ عَلٰٓى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾

130. सलाम हो इल्यास पर।

اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾

131. बेशक हम नेकूकारों को इसी तरह सिला दिया करते हैं।

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾

132. बेशक वोह हमारे (कामिल) ईमानवाले बंदों में से थे।

وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾

133. और बेशक लूत (عليه السلام भी) रसूलों में से थे।

اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣٤﴾

134. जब हमने उनको और उनके सब घरवालों को नजात बख़्शी।

اِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٣٥﴾

135. सिवाए उस बुढ़ियाको जो पीछे रेह जानेवालों में थी।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٣٦﴾

136. फिर हमने दूसरों को हलाक कर डाला।

وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿١٣٧﴾

137. और बेशक तुम लोग उन (की उजड़ी बस्तियों) पर (मक्का से मुल्के शाम की तरफ़ जाते हुऐ) सुब्ह़ के वक़्त भी गुज़रते हो।

ع ٤ ٢٥ ٨

وَبِالَّيْلِ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٣٨

138. और रात को भी, क्या फिर भी तुम अ़क़्ल नहीं रखते।

وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٣٩

139. और यूनुस (عليه السلام भी) वाक़ई रसूलों में से थे।

اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۝١٤٠

140. जब वोह भरी हुई कश्ती की तरफ़ दौड़े।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ۝١٤١

141. फिर (कश्ती भंवर में फंस गई तो) उन्होंने क़ुर्आ डाला तो वोह (क़ुर्आ में) मग़लूब हो गए (या'नी उनका नाम निकल आया और कश्तीवालोंने उन्हें दरिया में फेंक दिया)।

فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ۝١٤٢

142. फिर मछली ने उनको निगल लिया और वोह (अपने आप पर) नादिम रेहनेवाले थे।

فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ۝١٤٣

143. फिर अगर वोह (अल्लाह की) तस्बीह़ करनेवालों में से न होते।

النصف

لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝١٤٤

144. तो उस (मछली) के पेट में उस दिन तक रेहते जब लोग (क़ब्रो से) उठाऐ जाएंगे।

فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ۝١٤٥

145. फिर हमने उन्हें (साहिले दरिया पर) खुले मेदान में डाल दिया ह़ालांकि वोह बीमार थे।

وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ۝١٤٦

146. और हमने उन पर (कद्दू का) बेलदार दरख़्त उगा दिया।

وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ
يَزِيْدُوْنَ ۝١٤٧

147. और हमने उन्हें (अर्ज़े मूसल में क़ौमे नैनवा के) एक लाख या उससे ज़ियादह अफराद की तरफ़ भेजा था।

فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝١٤٨

148. सो (आसारे अ़ज़ाब को देख कर) वोह लोग ईमान लाए तो हमने उन्हें एक वक़्त तक फायदाह पहुंचा।

فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ
الْبَنُوْنَ ۝١٤٩

149. पस आप इन (कुफ़्फ़ारे मक्का) से पूछिए क्या आपके रबके लिए बेटियां हैं और उन के लिए बेटे हैं।

اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ
شٰهِدُوْنَ ۝١٥٠

150. क्या हमने फ़रिश्तों को औ़रतें बना कर पैदा किया तो वोह उस वक़्त (मौक़े' पर) ह़ाज़िर थे।

اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٥١﴾

151. सुन लो ! वोह लोग यक़ीनन अपनी बोहतान तराशी से (येह) बात करते हैं।

وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١٥٢﴾

152. कि अल्लाह ने औलाद जनी और बेशक येह लोग झूटे हैं।

اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ﴿١٥٣﴾

153. क्या उनके बेटोंके मुकाबले में बेटियों को पसंद फ़रमाया है (कुफ़्फ़ारे मक्का की ज़ेहनियत की ज़बान में उनही के अक़ीदे का रद किया जा रहा है)।

مَا لَكُمْ ۫ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿١٥٤﴾

154. तुम्हें क्या हुआ है ? तुम कैसा इन्साफ़ करते हो।

اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿١٥٥﴾

155. क्या तुम ग़ौर नहीं करते।

اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥٦﴾

156. क्या तुम्हारे पास (अपने फिक्रो नज़रिये पर) कोई वाज़ेह दलील है ?

فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٥٧﴾

157. तुम अपनी किताब पेश करो अगर तुम सच्चे हो।

وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ

158. और उन्होंने (तो) अल्लाह और जिन्नात के दरमियान (भी) नसबी रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है। हालांकि जिन्नात को मा'लूम है कि वोह (भी अल्लाह के हुज़ूर) यक़ीनन पेश किए जाएंगे।

وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾

159. अल्लाह उन बातों से पाक है जो येह बयान करते हैं।

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٥٩﴾

160. मगर अल्लाहके चुनीदह-व-बरगुज़ीदह बन्दे (इन बातों से मुस्तस्ना हैं)।

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٠﴾

161. पस तुम और जिन (बुतों) की तुम परस्तिश करते हो।

فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾

162. तुम सब अल्लाह के ख़िलाफ़ किसी को गुमराह नहीं कर सक्ते।

مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾

163. सिवाए उस शख़्स के जो दोज़ख़में जा गिरनेवाला है।

اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾

164. और (फ़रिश्ते केहते हैं) हम में से भी हर एकका मुक़ाम मुक़र्रर है।

وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾

وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾

165. और यक़ीनन हम तो ख़ुद सफ़ बस्ता रेहनेवाले हैं।

وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾

166. और यक़ीनन हम तो ख़ुद (अल्लाह की) तस्बीह़ करनेवाले हैं।

وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾

167. और येह लोग यक़ीनन कहा करते थे।

لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾

168. कि अगर हमारे पास (भी) पहले लोगों की कोई (किताबे) नसीह़त होती।

لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾

169. तो हम (भी) ज़रूर अल्लाह के बरगुज़ीदह बन्दे होते।

فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾

170. फिर (अब) वोह उस (क़ुरआन) के मुन्किर हो गऐ सो वोह अ़नक़रीब (अपना अंजाम) जान लेंगे।

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾

171. और बेशक हमारा फ़रमान हमारे भेजे हुए बन्दों (या'नी रसूलों) के हक़ में पहले सादिर हो चुका है।

اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾

172. कि बेशक वोही मदद याफ़्ता लोग हैं।

وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾

173. और बेशक हमारा लश्कर ही ग़ालिब होनेवाला है।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾

174. पस एक वक्त तक आप उनसे तवज्जोह हटा लीजिए।

وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾

175. और उन्हें (बराबर) देखते रहिए सो वोह अ़नक़रीब (अपना अंजाम) देख लेंगे।

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾

176. और क्या येह हमारे अ़ज़ाबमें जल्दी के ख़्वाहिशमंद हैं।

فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٧﴾

177. फिर जब वोह (अ़ज़ाब) उनके सामने उतरेगा तो उनकी सुब्ह़ क्या ही बुरी होगी जिन्हें डराया गया था।

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٨﴾

178. पस आप उनसे थोड़ी मुद्दत तक तवज्जोह हटाए रखिए।

وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾

179. और उन्हें (बराबर) देखते रहिऐ, सो वोह अ़नक़रीब (अपना अंजाम) देख लेंगे।

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا
يَصِفُوْنَ ۚ ﴿١٨٠﴾

180. आपका रब, जो इ़ज़्ज़त का मालिक है उन (बातों) से पाक है जो वोह बयान करते हैं।

وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ۚ ﴿١٨١﴾

181. और (तमाम) रसूलों पर सलाम हो।

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾ ع

182. और सब ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।

आयातुहा 88	38 सूरतुस सॉद मक्किय्यतुन 38	रुकूआतुहा 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रह़म फ़रमानेवाला है।

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ۭ ﴿١﴾

1. सॉद (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं) जिक्रवाले क़ुरआन की क़सम।

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ عِزَّةٍ وَّ
شِقَاقٍ ﴿٢﴾

2. बल्कि काफ़िर लोग (ना ह़क़) ह़मिय्यतो तकब्बुर में और (हमारे नबी ﷺ की) मुखालिफ़तो अ़दावत में (मुब्तिला) हैं।

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ
فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾

3. हमने कितनी ही उम्मतों को उनसे पहले हलाक कर दिया तो वोह (अ़ज़ाब को देख कर) पुकारने लगे ह़ालांकि अब खुलासी (और रिहाई) का वक्त नहीं रहा था।

وَ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ
مِّنْهُمْ ۡ وَ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا
سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۖ ﴿٤﴾

4. और उन्होंने इस बात पर तअ़ज्जुब किया कि उनके पास उन्ही में से एक डर सुनानेवाला आ गया है। और कुफ़्फ़ार केहने लगे : येह जादूगर है, बहुत झूटा है।

اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ
هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ﴿٥﴾

5. क्या उसने सब मा'बूदों को एक ही मा'बूद बना रखा है बेशक येह तो बड़ी ही अ़जीब बात है।

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا
وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا

6. और उनके सरदार (अबू तालिब के घर में नबिय्ये अकरम ﷺ की मजलिस से उठ कर) चल खड़े हुए

لَشَيْءٌ يُّرَادُ ۝٦

(बाकी लोगों से) येह केहते हुए कि तुम भी चल पड़ो, और अपने मा'बूदों (की परस्तिश) पर साबित क़दम रहो येह ज़रूर ऐसी बात है जिस में कोई ग़रज़ (और मुराद) है।

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۖ
اِنْ هٰذَآ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۝٧

7. हमने उस (अक़ीदए तौहीद) को आख़िरी मिल्लते (नसरानी या मज़हबे कुरैश) में भी नहीं सुना, येह सिर्फ़ ख़ुद साख़्ता झूट है।

ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا ۭ
بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ
لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝٨

8. क्या हम सब में से उसी पर येह ज़िक्र (या'नी क़ुरआन) उतारा गया है, बल्कि वोह मेरे ज़िक्र की निस्बत शक में (गिरफ़्तार) हैं, बल्कि उन्होंने अभी मेरे अ़ज़ाबका मज़ा नहीं चखा।

اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ
رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۝٩

9. क्या उनके पास आपके रबकी रहमत के ख़ज़ाने हैं जो ग़ालिब है बहुत अ़ता फ़रमानेवाला है।

اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَا بَيْنَهُمَا ۖ فَلْيَرْتَقُوْا فِي
الْاَسْبَابِ ۝١٠

10. या उनके पास आस्मानों और ज़मीन की और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है उसकी बादशाहत है, (अगर है) तो उन्हें चाहिए के रसिय्यां बांध कर (आस्मान पर) चढ़ जाएं।

جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ
الْاَحْزَابِ ۝١١

11. (कुफ़्फ़ार के) लश्करों में से येह एक हक़ीर सा लश्कर है जो इसी जगह शिकस्त ख़ुर्दा होनेवाला है।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّ
فِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ۝١٢

12. इनसे पहले क़ौमे नूह़ने और आ़दने और बड़ी मज़बूत हुकूमतवाले (या मेख़ों से अज़िय्यत देनेवाले) फ़िरऔ़नने (भी) झुटलाया था।

وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ ۭ
اُولٰۗىِٕكَ الْاَحْزَابُ ۝١٣

13. और समूद ने और क़ौमे लूतने और ऐका (बन) के रेहनेवालों ने (या'नी कौमे शुऐ़ब ने) भी (झुटलाया था) यही वोह बड़े लश्कर थे।

اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ
عِقَابِ ۝١٤

14. (उन में से) हर एक गिरोहने रसूलों को झुटलाया तो (उन पर) मेरा अ़ज़ाब वाजिब हो गया।

ع ١ ١٤ ١٠

وَ مَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ﴿١٥﴾

15. और येह सब लोग एक निहायत सख़्त आवाज़ (चिंघाड) का इन्तिज़ार कर रहे हैं जिस में कुछ भी तवक्कुफ़ न होगा।

وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ﴿١٦﴾

16. और वोह केहते हैं : ऐ हमारे रब ! रोज़े हिसाब से पहले ही हमारा हिस्सा हमें जल्द दे दे।

اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿١٧﴾

17. (ऐ हबीबे मुकर्रम !) जो कुछ वोह केहते हैं आप उस पर सब्र जारी रखिए और हमारे बंदे दाऊद (علیہ السلام) का ज़िक्र करें जो बड़ी कुव्वतवाले थे, बेशक वोह (हमारी तरफ़) बहुत रुजूअ करनेवाले थे।

اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ﴿١٨﴾

18. बेशक हमने पहाड़ोंको उनके जेरे फ़रमान कर दिया था, जो (उनके साथ मिल कर) शामको और सुब्हको तस्बीह़ किया करते थे।

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿١٩﴾

19. और परिन्दों को भी जो (उनके पास) जमा' रेहते थे हर एक उनकी तरफ़ (इताअ़त के लिए) रजूअ करनेवाला था।

وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾

20. और हमने उनके मुल्को सल्तनत को मज़बूत कर दिया था और हमने उन्हें हिक्मतो दानाई और फ़ैसला कुन अंदाज़े ख़िताब अता किया था।

وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾

21. और क्या आपके पास झगड़नेवालों की ख़बर पहुंची । जब वोह दीवार फांद कर (दाऊद علیہ السلام की) इबादत गाह में दाख़िल हो गए।

وقف لازم

اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾

22. जब वोह दाऊद (علیہ السلام) के पास अंदर आ गए तो वोह उनसे घबराए, उन्होंने कहा : घबराइए नहीं, हम (एक) मुक़द्दमे में दो फ़रीक़ हैं, हम में से एकने दूसरे पर ज़ियादती की है आप हमारे दरमियान ह़क़्क़ो इन्साफ़ के साथ फ़ैसला कर दें। और ह़द से तजावुज़ न करें और हमें सीधी राहकी तरफ़ रहबरी कर दें।

إِنَّ هَٰذَآ أَخِى ۖ لَهُۥ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ
نَعْجَةً وَلِىَ نَعْجَةٌ وَٰحِدَةٌ ۖ فَقَالَ
أَكْفِلْنِيهَا وَعَزَّنِى فِى ٱلْخِطَابِ ﴿٢٣﴾

23. बेशक येह मेरा भाई है, इस की निन्नानवे दुंबियां हैं और मेरे पास एक ही दुंबी है फिर केहता है येह (भी) मेरे हवाले कर दो और गुफ़्तगू में (भी) मुझे दबा लेता है।

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ
نِعَاجِهِۦ ۖ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ ٱلْخُلَطَآءِ
لَيَبْغِى بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ إِلَّا
ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ
وَقَلِيلٌ مَّا هُمْ ۗ وَظَنَّ دَاوُۥدُ أَنَّمَا
فَتَنَّٰهُ فَٱسْتَغْفَرَ رَبَّهُۥ وَخَرَّ رَاكِعًا
وَأَنَابَ ۩ ﴿٢٤﴾ السجدة ١٠

24. दाऊद (عليه السلام) ने कहा तुम्हारी दुंबी को अपनी दुन्बियोंसे मिलानेका सवाल कर के उसने तुम से ज़ियादती की है बेशक अक्सर शरीक एक दूसरे पर ज़ियादती करते हैं सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक अ़मल किए, और ऐसे लोग बहुत कम हैं। और दाऊद (عليه السلام) ने ख़याल किया के हमने (उस मुकद्दमे के जरीऐ) उनकी आज़माइश की है सो उन्होंने अपने रबसे मग़फ़िरत तलब की और सजदह में गिर पड़े और तौबा की।

فَغَفَرْنَا لَهُۥ ذَٰلِكَ ۖ وَإِنَّ لَهُۥ عِندَنَا
لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَـَٔابٍ ﴿٢٥﴾

25. तो हमने उनको मुआ़फ़ फ़रमा दिया, बेशक उनके लिए हमारी बारगाह में क़ुर्बे ख़ास है और (आख़िरत में) आ'ला मुक़ाम है।

يَٰدَاوُۥدُ إِنَّا جَعَلْنَٰكَ خَلِيفَةً فِى
ٱلْأَرْضِ فَٱحْكُم بَيْنَ ٱلنَّاسِ
بِٱلْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ ٱلْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ
عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱلَّذِينَ
يَضِلُّونَ عَن سَبِيلِ ٱللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيدٌۢ بِمَا نَسُوا۟ يَوْمَ ٱلْحِسَابِ ﴿٢٦﴾ ع ١٢ ٢ ١١

26. ऐ दाऊद ! बेशक हमने आपको ज़मीन में (अपना) नाइब बनाया सो तुम लोगोंके दरमियान हक़्क़ो इन्साफ़ के साथ फ़ैसले (या हुकूमत) क्या करो और ख़्वाहिश की पैरवी न करना वरना (येह पैरवी) तुम्हें राहे खुदा से भटका देगी, बेशक जो लोग अल्लाहकी राह से भटक जाते हैं उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है इस वजह से कि वोह यौमे हिसाब को भूल गए।

وَمَا خَلَقْنَا ٱلسَّمَآءَ وَٱلْأَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَا بَٰطِلًا ۚ ذَٰلِكَ ظَنُّ ٱلَّذِينَ

27. और हमने आस्मानों को और ज़मीन को और जो काइनात दोनों के दरमियान है उसे बे मक़्सदो बे मस्लेहत नहीं बनाया । येह (बे मक़्सद या'नी इत्तिफ़ाक़िया

तख़्लीक़) काफ़िर लोगों का ख़यालो नज़रिया है। सो काफ़िर लोगों के लिए आतिशे दोज़ख़की हलाकत है।

كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾

28. क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और आ'माले सालेहा बजा लाए उन लोगों जैसा कर देंगे जो ज़मीनमें फ़साद बपा करनेवाले हैं या हम परहेज़गारों को बद किरदारों जैसा बना देंगे।

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۫ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿٢٨﴾

29. येह किताब बरकतवाली है। जिसे हमने आपकी तरफ़ नाज़िल फ़रमाया है ताकि दानिशमंद लोग उसकी आयतोंमें गौरो फ़िक्र करें और नसीहत हासिल करें।

كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَ لِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

30. और हमने दाऊद (عليه السلام) को (फ़रजन्द) सुलैमान (عليه السلام) बख़्शा वोह क्या खूब बन्दा था, बेशक वोह बड़ी कसरत से तौबा करनेवाला है।

وَ وَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿٣٠﴾

31. जब उनके सामने शामके वक़्त निहायत सुबुक रफ़्तार उमदा घोड़े पेश किए गए।

اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ﴿٣١﴾

32. तो उन्होंने (इनाबतन) कहा : मैं माल (या'नी घोड़ों) की महब्बत को अपने रबके ज़िक्र से भी (ज़ियादह) पसंद कर बैठा हूं यहां तक कि (सूरज रात के) पर्दे में छुप गया ।

فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾ وقفة

33. उन्होंने कहा : उन (घोड़ों) को मेरे पास वापस लाओ तो उन्होंने (तलवार से) उनकी पिन्डलियां और गर्दनें काट डालीं (यूं अपनी मुहब्बत को अल्लाह के तक़र्रुब के लिए ज़ब्ह कर दिया)।

رُدُّوْهَا عَلَيَّ ؕ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾

34. और बेशक हमने सुलैमान (عليه السلام) की (भी) आज़माइश की और हमने उनके तख़्त पर एक (अजीबुल

وَ لَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَ اَلْقَيْنَا عَلٰى

كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ﴿٣٤﴾

ख़िल्क़त) जिस्म डाल दिया फिर उन्होंने दोबारा (सल्तनत) पा ली।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا
لَّا يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ
اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾

35. अ़र्ज किया : ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे बख़्श दे, और मुझे ऐसी हुकूमत अ़ता फ़रमा कि मेरे बाद किसी को मुयस्सर न हो बेशक तू ही बड़ा अ़ता फ़रमानेवाला है।

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ
رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿٣٦﴾

36. फिर हमने उन के लिए हवा को ताबे' कर दिया, वोह उन के हुक्म से नर्म नर्म चलती थी जहां कहीं (भी) वोह पहुंचना चाहते।

وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿٣٧﴾

37. और कुल जिन्नात (व शयातीन भी उनके ताबे' कर दिए) और हर मे'मार और ग़ोता जन (भी)।

وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ﴿٣٨﴾

38. और दूसरे (जिन्नात) भी जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए थे।

هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ
بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٩﴾

39. (इर्शाद हुवा :) येह हमारी अ़ता है (ख़्वाह दूसरों पर) एह़सान करो या (अपने तक) रोके रखो (दोनों ह़ालतों में) कोई ह़िसाब नहीं।

وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ
مَاٰبٍ ﴿٤٠﴾ ع

40. और बेशक उनके लिए हमारी बारगाहमें खुसूसी कुर्बत और आख़िरत में उ़मदा मुक़ाम है।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى
رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ
وَّعَذَابٍ ﴿٤١﴾

وقف لازم

41. और हमारे बन्दे अैयूब (عليه السلام) का ज़िक्र कीजिए जब उन्होंने अपने रबको पुकारा कि मुझे शैतानने बड़ी अज़िय्यत और तक्लीफ़ पहुंचाई है।

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ
بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿٤٢﴾

42. (इर्शाद हुवा :) तुम अपना पाँव ज़मीन पर मारो येह (पानी का) ठंडा चश्मा है नहाने के लिए और पीने के लिए।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ
رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِي

43. और हमने उनको उनके अहलो अ़याल और उनके साथ उनके बराबर (मज़ीद अहलो अ़याल) अ़ता कर दिए हमारी तरफ़ से खुसूसी रहमत के तौर पर और दानिशमंदों

الْاَلْبَابِ ﴿٤٣﴾

के लिए नसीहत के तौर पर।

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾

44. (ऐ अैयूब !) तुम अपने हाथ में (सौ) तिन्कों की झाड़ू पकड़ लो और (अपनी क़सम पूरी करने लिए) उससे (एक बार अपनी ज़ौजा को) मारो और क़सम न तोड़ो, बेशक हमने उसे साबित क़दम पाया (अैयूब عليه السلام) क्या खूब बंदा था, बेशक वोह (हमारी तरफ़) बहुत रुजूअ़ करनेवाला था।

وَاذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ وَ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ اُولِى الْاَيْدِىْ وَ الْاَبْصَارِ ﴿٤٥﴾

45. और हमारे बंदों इब्राहीम और इस्हाक़ और या'कूब (عليهم السلام) का ज़िक्र कीजिए जो बड़ी कुव्वतवाले और नज़रवाले थे।

اِنَّاۤ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿٤٦﴾ ۚ

46. बेशक हमने उनको आख़िरत के घर की याद की ख़ास (ख़स्लत) की वजह से चुन लिया था।

وَ اِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٧﴾ ؕ

47. और बेशक वोह हमारे हुजूर बड़े मुन्तख़बो बरगुज़ीदह (और) पसंदीदह बन्दों में से थे।

وَ اذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَ الْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٨﴾ ؕ

48. और आप इस्माईल और अल यसा' और जुल किफ़्ल (عليهم السلام) का (भी) ज़िक्र कीजिए और वोह सारे के सारे चुने हुए लोगों में से थे।

هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٩﴾ ۙ

49. येह (वोह) ज़िक्र है (जिसका बयान इस सूरत की पेहली आयतमें है) और बेशक परहेज़गारों के लिए उ़मदा ठिकाना है।

جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿٥٠﴾ ۚ

50. (जो) दाइमी इक़ामत के लिए बाग़ाते अ़दन हैं जिन के दरवाजे उन के लिए खुले होंगे।

مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥١﴾

51. वोह उसमें (मस्नदों पर) तकिये लगाए बैठे होंगे उसमें (वक़्फ़े वक़्फ़े से) बहुतसे उ़मदा फल और मेवे और (लज़ीज़) शरबत तलब करते रहेंगे।

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾

52. और उनके पास नीची निगाहों वाली (बा हया) हम उम्र (हूरें) होंगी।

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ الثالثة

53. येह वोह ने'मतें हैं जिनका रोज़े हिसाब के लिए तुम से वा'दा किया जाता है।

اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾ ج

54. बेशक येह हमारी बख़्शिश है उसे कभी भी ख़त्म नहीं होना।

هٰذَا ؕ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾ لا

55. येह (तो मोमिनों के लिए है) और बेशक सरकशों के लिए बहुत ही बुरा ठिकाना है।

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾

56. (वोह) दोज़ख़ है, जिसमें वोह दाख़िल होंगे सो बहुत ही बुरा बिछोना है।

هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ لا

57. येह (अ़ज़ाब है) पस उन्हें येह चखना चाहिए खौलता हुवा पानी और पीप है।

وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ اَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾ ط

58. और उसी शक्लमें और भी तरह़ तरह़ का (अ़ज़ाब) है।

هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٥٩﴾

59. (दोज़ख़के दारोग़े या पहले से मौजूद जहन्नमी कहेंगे) येह एक (और) फ़ौज है जो तुम्हारे साथ (जहन्नम में) घुसती चली आ रही है, उन्हें कोई ख़ुश आमदीद नहीं, बेशक वोह (भी) दोज़ख़में दाख़िल होनेवाले हैं।

قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۛؕ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾

60. वोह (आनेवाले) कहेंगे : बल्कि तुम ही हो कि तुम्हें कोई फ़राख़ी नसीब न हो, तुम ही ने येह (कुफ़्र और अ़ज़ाब) हमारे सामने पेश किया सो (येह) बुरी क़रारगाह है।

قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿٦١﴾

61. वोह कहेंगे : ऐ हमारे रब ! जिसने येह (कुफ़्र या अ़ज़ाब) हमारे लिए पेश किया था तो उसे दोज़ख़में दो गुना अ़ज़ाब बढ़ा दे।

وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿٦٢﴾ ط

62. और वोह कहेंगे : हमें क्या हो गया है हम (उन) अश्ख़ास को (यहां) नहीं देखते जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे।

أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ ﴿٦٣﴾

63. क्या हम उनका (नाहक़) मज़ाक़ उडाते थे या हमारी आँखें उन्हें (पहेचानने) से चूक गई थीं (येह अम्मार, ख़ब्बाब, सुहैब, बिलाल और सुलैमान (ﷺ) जैसे फ़ुक़रा और दुर्वेश थे)।

إِنَّ ذَٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾

64. बेशक येह अह्ले जहन्नम का आपस में झगड़ना यक़ीनन हक़ है।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾

65. फ़रमा दीजिए : मैं तो सिर्फ़ डर सुनानेवाला हूं और अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो यक्ता सब पर ग़ालिब है।

رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾

66. आस्मानों और ज़मीनका और जो काइनात इन दोनों के दरमियान है (सब) का रब है बड़ी इ़ज़्ज़तवाला, बड़ा बख़्शनेवाला है।

قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ﴿٦٧﴾

67. फ़रमा दीजिए : वोह (क़ियामत) बहुत बड़ी ख़बर है।

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ﴿٦٨﴾

68. तुम उससे मुंह फेरे हुए हो।

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٦٩﴾

69. मुझे तो (अज़ ख़ुद) आ़लमे बाला की जमाअ़ते (मलाइका) की कोई ख़बर न थी जब वोह (तख़्लीक़े आदम के बारे में) बहसो तम्हीस कर रहे थे।

إِنْ يُوحَىٰ إِلَيَّ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٧٠﴾

70. मुझे तो (अल्लाह की तरफ़ से) वही की जाती है मगर येह कि मैं साफ़ साफ़ डर सुनानेवाला हूं।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَائِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ طِينٍ ﴿٧١﴾

71. (वोह वक़्त याद कीजिए) जब आपके रबने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं (गीली) मिट्टी से एक पैकरे बशरिय्यत पैदा फ़रमानेवाला हूं।

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٧٢﴾

72. फिर जब मैं उस (के ज़ाहिर) को दुरुस्त कर लूं और उस (के बातिन) में अपनी (नूरानी) रूह फूंक दूं तो तुम उस (की ता'ज़ीम) के लिए सजदा करते हुऐ गिर पड़ना।

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٧٣﴾

73. पस सब के सब फ़रिश्तों ने बिल इज्माअ़ सजदा किया।

إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ

74. सिवाए इब्लीस के, उसने (शाने नुबुव्वत के सामने)

مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾

तकब्बुर किया और काफ़िरों में से हो गया।

قَالَ يٰۤاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ
تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ؕ
اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ﴿٧٥﴾

75. (अल्लाहने) इर्शाद फ़रमाया : ऐ इब्लीस ! तुझे किसने उस (हस्ती) को सजदा करने से रोका है जिसे मैंने खुद अपने दस्ते (करम) से बनाया है, क्या तूने (उससे) तकब्बुर किया या तू (ब ज़ो'मे ख़ीश) बुलंद रुत्बा (बना हुआ) था।

قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ؕ خَلَقْتَنِيْ
مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧٦﴾

76. उसने (नबी के साथ अपना मुवाज़ना करते हुए) कहा कि मैं उससे बेहतर हूं, तूने मुझे आग से बनाया है और तूने इसे मिट्टी से बनाया है।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿٧٧﴾ ۚ

77. इर्शाद हुआ सो तू (इस गुस्ताख़िए नुबुव्वत के जुर्म में) यहां से निकल जा, बेशक तू मरदूद है।

وَّ اِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْۤ اِلٰى يَوْمِ
الدِّيْنِ ﴿٧٨﴾

78. और बेशक तुझ पर क़ियामत के दिन तक मेरी ला'नत रहेगी।

قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْۤ اِلٰى يَوْمِ
يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾

79. उसने कहा : ऐ परवरदिगार ! फिर मुझे उस दिन तक (ज़िन्दा रेहने की) मोहलत दे जिस दिन लोग क़ब्रों से उठाए जाएंगे।

قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾ لا

80. इर्शाद हुवा : (जा) बेशक तू मोहलत वालों में से है।

اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨١﴾

81. उस वक़्त के दिन तक जो मुक़र्रर(और मा'लूम) है।

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾ لا

82. उसने कहा : सो तेरी इज़्ज़त की क़सम, मैं उन सब लोगों को ज़रूर गुमराह करता रहूंगा।

اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٨٣﴾

83. सिवाए तेरे उन बन्दों के जो चुनीदह-व-बरगुज़ीदह हैं।

قَالَ فَالْحَقُّ ۟ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿٨٤﴾ ج

84. इर्शाद हुआ : पस हक़ (येह) है और मैं हक़ ही केहता हूं।

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَ مِمَّنْ
تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٥﴾

85. कि मैं तुझ से और जो लोग तेरी (गुस्ताख़ाना सोच की) पैरवी करेंगे उन सब से दोज़ख़ को भर दूंगा।

قُلْ مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ
اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿٨٦﴾

86. फ़रमा दीजिए : मैं तुम से इस (ह़क़ की तबलीग़) पर कोई मुआवज़ा तलब नहीं करता और न मैं तकल्लुफ़ करनेवालों में से हूं।

اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾

87. येह (क़ुरआन) तो सारे जहानवालों के लिए नसीह़त ही है।

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿٨٨﴾ ع

88. और तुम्हें थोड़े ही वक़्त के बाद ख़ुद उसका ह़ाल मा'लूम हो जाएगा।

आयातुहा 75 | 39 सूरतुज़ ज़ुमर मक्किय्यतुन 59 | रुकूआ़तुहा 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ
الْحَكِيْمِ ﴿١﴾

1. इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की तरफ़ से है जो बड़ी इ़ज़्ज़तवाला, बड़ी ह़िक्मतवाला है।

اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ
فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿٢﴾

2. बेशक हमने आपकी तरफ़ (येह) किताब ह़क़ के साथ नाज़िल की है तो आप अल्लाह की इ़बादत उस के लिए ताअ़तो बंदगी को ख़ालिस रखते हुए किया करें।

اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ
اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۘ
مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى
اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ
مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ڛ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾

3. (लोगों से केह दें) सुन लो ताअ़तो बंदगी ख़ालिसतन अल्लाह ही के लिए है और जिन (कुफ़्फ़ार) ने अल्लाह के सिवा (बूतों को) दोस्त बना रखा है वोह (अपनी बुत परस्ती के झूटे जवाज़ के लिए येह केहते हैं कि) हम उनकी परस्तिश सिर्फ़ इस लिए करते हैं कि वोह हमें अल्लाह का मुक़र्रब बना दें, बेशक अल्लाह उनके दरमियान इस चीज़ का फ़ैसला फ़रमा देगा जिस में वोह इख़्तिलाफ़ करते हैं, यक़ीनन अल्लाह उस शख़्स को हिदायत नहीं फ़रमाता जो झूटा है, बडा नाशुक्र गुज़ार है।

وقف لازم

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا

4. अगर अल्लाह इरादाह फ़रमाता कि (अपने लिए)

لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ
سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٤
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ
يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَ يُكَوِّرُ
النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ
اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝٥
خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ
جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَ اَنْزَلَ لَكُمْ
مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ
يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا
مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ
لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٦
اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۚ وَلَا
يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا
يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ
اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧

औलाद बनाए तो अपनी मख्लूक़में से जिसे चाहता मुन्तख़ब फ़रमा लेता, वोह पाक है, वोही अल्लाह है, जो यक्ता है सब पर ग़ालिब है।

5. उसने आस्मानों और ज़मीन को सहीह् तदबीर के साथ पैदा फ़रमाया। वोह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उसीने सूरज और चांद को (एक निज़ाम में) मुसख़्ख़र कर रखा है हर एक (सितारा और सय्यारा) मुक़र्रर वक़्त की ह़द तक (अपने मदार में) चलता है, ख़बरदार वोही (पूरे निज़ाम पर) ग़ालिब, बड़ा बख़्शनेवाला है।

6. उसने तुम सबको एक ह़यातियाती ख़ुल्ये से पैदा फ़रमाया फिर उससे उसी जैसा जोड़ बनाया फिर उसने तुम्हारे लिए आठ जानदार जानवर मुहय्या किए वोह तुम्हारी माओं के रेहमों में एक तख़्लीक़ी मर्हलेसे अगले मर्हले में तरतीब के साथ तुम्हारी तश्कील करता है (इस अ़मल को) तीन किस्म के तारीक पर्दों में (मुकम्मल फ़रमाता है), यही तुम्हारा परवरदिगार है जो सब कुदरतो सल्तनत का मालिक है, उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, फिर (तख़्लीक के येह मुख़्फ़ी ह़क़ाईक़ जान लेने के बाद भी) तुम कहां बेहके फिरते हो।

7. अगर तुम कुफ़्र करो तो बेशक अल्लाह तुम से बेनियाज़ है और वोह अपने बंदों केलिए कुफ़्र (व नाशुक्री) पसंद नहीं करता और अगर तुम शुक्रगुज़ारी करो (तो) उसे तुम्हारे लिए पसंद फ़रमाता है और कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाऐगा फिर तुम्हें अपने रबकी तरफ़ लौटना है फिर वोह तुम्हें उन कामों से ख़बरदार कर देगा जो तुम करते रहे थे, बेशक वोह सीनों की (पोशीदाह) बातों को (भी) खूब जानने वाला है।

وَ اِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْٓا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَ جَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ﴿۸﴾

8. और जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुंचती है तो वोह अपने रबको उसीकी तरफ़ रुजूअ़ करते हुए पुकारता है फिर जब (अल्लाह) उसे अपनी जानिब से कोई ने'मत बख़्श देता है तो वोह उस (तक्लीफ़) को भूल जाता है जिसके लिए वोह पहले दुआ़ किया करता था और (फिर) अल्लाह के लिए (बुतों को) शरीक ठेहराने लगता है ताकि (दूसरे लोगों को भी) उसकी राह से भटका दे, फ़रमा दीजिए : (ऐ काफ़िर !) तू अपने कुफ़्र के साथ थोड़ा सा (ज़ाहिरी) फायदाह उठा ले तू बेशक दोज़ख़ियों में से है।

اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّ قَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَ يَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۹﴾ ع ۱ ۹ ۱۵

9. भला (येह मुशरिक बेहतर है या) वोह (मोमिन) जो रात की घड़ियोंमें सुजूद और क़ियाम की ह़ालत में इ़बादत करनेवाला है, आख़िरत से डरता रेहता है और अपने रबकी रहमतकी उम्मीद रखता है, फ़रमा दीजिए : क्या जो लोग इ़ल्म रखते हैं और जो लोग इ़ल्म नहीं रखते (सब) बराबर हो सकते हैं। बस नसीह़त तो अ़क़्लमंद लोग ही क़ुबूल करते हैं।

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۱۰﴾

10. (महबूब मेरी तरफ़ से) फ़रमा दीजिए : ऐ मेरे बंदो ! जो ईमान लाए हो अपने रबका तक़्वा इख़्तियार करो। ऐसे ही लोगों के लिए जो उस दुनिया में साहबाने एहसान हुऐ। बेहतरीन सिला है और अल्लाह की सरज़मीन कुशादा है, बिलाशुबा सब्र करने वालों को उनका अज्र बे हिसाब अंदाज से पूरा क्या जाएगा।

قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿۱۱﴾ ۙ

11. फ़रमा दीजिए : मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इ़बादत, अपनी ताअ़तो बंदगी को उसके लिए ख़ालिस रखते हुऐ सरअंजाम दूं।

وَ اُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۲﴾

12. और मुझे येह (भी) हुक्म दिया गया था कि मैं (उसकी मख़्लूक़ात में) सबसे पहला मुसलमान बनूं।

قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣﴾

13. फ़रमा दीजिए : अगर मैं अपने रबकी ना फ़रमानी करों तो में जबरदस्त दिनके अ़ज़ाब से डरता हूं।

قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِيْ ﴿١٤﴾

14. फ़रमा दीजिए : मैं सिर्फ़ अल्लाहकी इ़बादत करता हूं, अपने दीन को उसी के लिए ख़ालिस रखते हुए।

فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ
اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ وَ اَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ
اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١٥﴾

15. सो तुम अल्लाह के सिवा जिस की चाहो पूजा करो, फ़रमा दीजिए : बेशक नुकसान उठानेवाले वही लोग हैं जिन्होंने क़ियामत के दिन अपनी जानों को और अपने घरवालों को ख़सारे में डाला । याद रखो येही खुला नुकसान है।

لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَ
مِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ
اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ؕ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿١٦﴾

16. उनके लिए उनके ऊपर(भी) आग के बादल (साएबान बने) होंगे और उनके नीचे भी आग के फ़र्श होंगे, येह वोह (अ़ज़ाब) है जिससे अल्लाह अपने बंदों को डराता है, ऐ मेरे बंदो ! बस मुझसे डरते रहो।

وَ الَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ
يَّعْبُدُوْهَا وَ اَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ
الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾

17. और जो लोग बुतोंकी परस्तिश करने से बचे रहे और अल्लाह की तरफ़ झुके रहे, उन के लिए ख़ुशख़बरी है, पस आप मेरे बंदों को बिशारत दे दीजिए।

الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ
فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ
هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَ اُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا
الْاَلْبَابِ ﴿١٨﴾

18. जो लोग बात को गौर से सुनते हैं, फिर उसके बेहतर पेहलू की इत्तिबाअ़ करते हैं यही वोह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत फ़रमाई है और येही लोग अक़्लमंद हैं।

اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ
اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ﴿١٩﴾ ۚ

19. भला जिस शख़्स पर अ़ज़ाबका हुक्म साबित हो चुका, तो क्या आप उस शख़्स को बचा सक्ते हैं जो (दाइमी) दोज़ख़ी हो चुका हो।

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ
غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَعْدَ
اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ﴿٢٠﴾

20. लेकिन जो लोग अपने रब से डरते हैं उनके लिए (जन्नतमें) बुलंद महल्लात होंगे जिनके उपर(भी) बालाखाने बनाए गए होंगे, उनकेनीचे से नेहरें रहां होंगी। येह अल्लाह का वा'दा है, अल्लाह वा'दे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं करता।

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِي الْاَرْضِ ثُمَّ
يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ
يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ
حُطَامًا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِي
الْاَلْبَابِ ﴿٢١﴾ ع ٢ ١٢ ١٦

21. (ऐ इन्सान !) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाहने आस्मान से पानी बरसाया, फिर ज़मीनमें उसके चश्मे रवां किए, फिर उसके ज़रीए खेती पैदा करता है, जिस के रंग जुदागाना होते हैं, फिर वोह (तैयार हो कर) खुश्क हो जाती है, फिर (पकने के बाद) तू उसे ज़र्द देखता है, फिर वोह उसे चूरा चूरा कर देता है, बेशक उसमें अ़क़्लवालों के लिए नसीह़त है।

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ
لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ
فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ
اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٢﴾

22. भला, अल्लाह ने जिस शख़्स का सीना इस्लामके लिए खोल दिया हो, तो वोह अपने रबकी तरफ़ से नूर पर (फ़ाइज़) हो जाता है, (उसके बर अ़क्स) पस उन लोगों के लिए हलाकत है जिन के दिल अल्लाह के जिक्र (के फ़ैज़) से (महरूम हो कर) सख़्त हो गए, येही लोग खुली गुमराही में हैं।

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا
مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ
جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ
تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى
ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ
بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

23. अल्लाह ही ने बेहतरीन कलाम नाज़िल फ़रमाया है, जो एक किताब है जिस की बातें (नज़्म और मआ़नी में) एक दूसरे से मिलती जुलती हैं (जिसकी आयतें) बार बार दोहराई गई हैं, जिससे उन लोगों के जिस्मों के रोंगटे ख़ड़े हो जाते हैं जो अपने रब से डरते हैं, फिर उनकी जिल्दें और दिल नर्म हो जाते हैं (और रिक़्त के साथ) अल्लाहके ज़िक्रकी तरफ़ (महूव हो जाते हैं) । येह अल्लाह की हिदायत है वोह जिसे चाहता है उसके ज़रीए रेहनुमाई

فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

फ़रमाता है। और अल्लाह जिसे गुमराह कर देता (या'नी गुमराह छोड देता) है तो उस के लिए कोई हादी नहीं होता।

اَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَ قِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. भला वोह शख़्स जो क़ियामत के दिन (आग के) बुरे अ़ज़ाबको अपने चेहरे से रोक रहा होगा (क्यों कि उसके दोनों हाथ बंधे होंगे, उसका क्या ह़ाल होगा ?) और ऐसे ज़ालिमों से कहा जाएगा उन बद आ'मालियों का मज़ा चखो जो तुम अंजाम दिया करते थे।

كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. ऐसे लोगों ने जो इनसे पहले थे (रसूलों को) झुटलाया था सो उन पर ऐसी जगह से अ़ज़ाब आ पहुंचा कि उन्हें कुछ शऊ़र ही न था।

فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَ لَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

26.पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया की जिन्दगी में (ही) जिल्लतो रुस्वाई का मज़ा चखा दिया और यक़ीनन आख़िरत का अ़ज़ाब कहीं बड़ा है काश ! वोह जानते होते।

وقف لازم

وَ لَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾

27. और दर ह़क़ीक़त हमने लोगों के(समझाने के) लिए उस क़ुरआनमें हर तरह की मिसाल बयान कर दी है ताकि वोह नसीह़त हासिल कर सकें।

قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. क़ुरआन अ़रबी जबान में है (जो सब जबानों से ज़ियादह साफ और बलीग़ है) जिस में जरा भी कजी नहीं है। ताकि वोह तकवा इख़्तियार करें।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَ رَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ

29.अल्लाहने एक मिसाल बयान फ़रमाई है ऐसे (गुलाम) शख़्स की जिसकी मिलकियत में कई ऐसे लोग शरीक हों जो बद अख़्लाक भी हों और बाहम झगड़ालु भी। और (दूसरे तरफ़) एक ऐसा शख़्स हो जो सिर्फ़ एक ही फ़र्द का गुलाम हो क्या येह दोनों (अपने) ह़ालात के लिहाज़ से

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾

यक्सां हो सकते हैं ? (हरगिज़ नहीं) सारी ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं । बल्कि उनमें से अक्सर लोग (हक़ीक़ते तौहीद को) नहीं जानते।

اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾

30. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) बेशक आपको (तो) मौत (सिर्फ़ ज़ाइक़ा चखने के लिए) आनी है और वोह यक़ीनन (दाइमी हलाकत केलिए) मुर्दा हो जाएंगे (फिर दोनों मौतों का फ़र्क़ देखनेवाला होगा)।★

ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾ ع ٣ ع ١٧

31. फिर बिला शुबा तुम लोग क़ियामत के दिन अपने रबके हुज़ूर बाहम झगड़ा करोगे (एक गिरोह दूसरे को केहगा के हमें मुकामे नुबुव्वत और शाने रिसालत को समझने से तुमने रोका था, वोह कहेंगे नहीं तुम खूद ही बदबख़्त और गुमराह थे)।

★ जिस तरह आयत : 29 में दी गई मिसालके मुताबिक दो अफ़राद के अह़वाल क़तअ़न बराबर नहीं होंगे उसी तरह इर्शाद फ़रमाया गया है कि हुज़ूर ﷺ की वफ़ात और दूसरों की मौत भी हरगिज़ बराबर या मुमासिल नहीं होंगी। दोनोंकी माहियत और ह़ालत में अ़ज़ीम फ़र्क़ होगा। येह मिसाल उसी मक़्सद केलिए बयान की गई थी कि शाने नबुव्वत के बाब में हमसरी और बराबरी का गुमान कुल्लियतन रद हो जाए। जैसे एक मालिक का गुलाम सह़ीह़ और सालिम रहा और बहुतसे बदख़ू मालिकों का गुलाम तबाह ह़ाल हुआ उसी तरह ऐ ह़बीबे मुकर्रम ! आप तो एक ही मालिक के बरगुज़ीदा बंदे और महबूबो मुक़र्रब रसूल हैं सो वोह आपको हर ह़ालमें सलामत रखेगा और येह कुफ़्फ़ार बहुतसे बुतों और शरीकों की गुलामी में हैं सो वोह उन्हें भी अपनी तरह दाइमी ह़लाकत का शिकार कर देंगे।